International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के बदलते आयाम: शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संदर्भ में एक अनुभवजन्य अध्ययन

डॉ. रेखा सुमन
अतिथि विद्वान, समाजशास्त्र विभाग
शासकीय महाविद्यालय मेहगांव
जिला भिण्ड

सार
वर्तमान अध्ययन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के बदलते आयामों का विश्लेषण शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संदर्भ में करने का प्रयास करता है। तीव्र तकनीकी विकास और आर्थिक परिवर्तन के बावजूद भारतीय समाज में अवसरों की समानता अब भी एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है। इस अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित अनुभवजन्य पद्धति का प्रयोग किया गया, जिसमें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से चयनित 400 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षा के स्तर में असमानता रोजगार के अवसरों को सीधे प्रभावित करती है तथा डिजिटल संसाधनों की सीमित उपलब्धता सामाजिक पिछड़ेपन को और अधिक गहरा करती है। शहरी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा, संगठित रोजगार एवं डिजिटल सुविधाओं की बेहतर उपलब्धता सामाजिक उन्नति को प्रोत्साहित करती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इन सुविधाओं का अभाव सामाजिक असमानता को स्थायी रूप प्रदान करता है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि डिजिटल विभाजन समकालीन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता का एक नया एवं महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है। यह शोध नीति-निर्माताओं एवं समाज-विज्ञानियों के लिए समान अवसर सृजन हेतु उपयोगी सुझाव प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक असमानता, शिक्षा, रोजगार, डिजिटल पहुँच, शहरी–ग्रामीण अंतर

1. परिचय

भारतीय समाज ऐतिहासिक रूप से विविधताओं और विषमताओं से युक्त रहा है। जाति, वर्ग, लिंग, क्षेत्र और आर्थिक स्थिति के आधार पर सामाजिक संरचना का निर्माण हुआ है, जिसमें अवसरों का वितरण समान नहीं रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक प्रावधानों, कल्याणकारी नीतियों तथा योजनाओं के माध्यम से सामाजिक समानता स्थापित करने के प्रयास किए गए, किंतु व्यावहारिक स्तर पर सामाजिक असमानता के अनेक रूप आज भी विद्यमान हैं। बदलते समय के साथ सामाजिक असमानता के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है, जहाँ पारंपरिक असमानताओं के साथ-साथ नए आयाम उभरकर सामने आए हैं [1]।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक प्रमुख माध्यम मानी जाती है। शिक्षा को समान अवसरों की कुंजी के रूप में देखा गया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक-आर्थिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। किंतु वास्तविकता यह है कि शिक्षा की उपलब्धता, गुणवत्ता एवं निरंतरता में शहरी-ग्रामीण, आर्थिक वर्गों तथा सामाजिक समूहों के बीच व्यापक अंतर पाया जाता है। उच्च शिक्षा तक पहुँच आज भी समाज के एक सीमित वर्ग तक केंद्रित है, जबकि बड़ी आबादी प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर ही शिक्षा से वंचित रह जाती है [2]। इस प्रकार शिक्षा स्वयं सामाजिक असमानता को कम करने के बजाय कई बार उसे पुनः उत्पन्न करने का माध्यम बन जाती है।

शिक्षा के साथ-साथ रोजगार भी सामाजिक असमानता का एक केंद्रीय आयाम है। संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के बीच विद्यमान अंतर, रोजगार की सुरक्षा, आय स्तर तथा कार्य परिस्थितियाँ सामाजिक विभाजन को और अधिक गहरा करती हैं। शहरी क्षेत्रों में औपचारिक एवं निजी क्षेत्र के रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत अधिक हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित श्रम, अस्थायी कार्य एवं बेरोजगारी की समस्या अधिक गंभीर रूप में दिखाई देती है [3]। शिक्षा और रोजगार के बीच गहरा अंतर्संबंध है, जहाँ सीमित शिक्षा रोजगार के अवसरों को सीमित करती है और कमजोर रोजगार स्थिति सामाजिक पिछड़ेपन को बनाए रखती है।

इक्कीसवीं शताब्दी में तकनीकी विकास ने समाज में एक नया परिवर्तनकारी तत्व जोड़ा है, जिसे डिजिटल क्रांति के रूप में जाना जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस जैसी सुविधाओं ने जीवन को सरल बनाने के साथ-साथ नए अवसर भी प्रदान किए हैं। किंतु इन डिजिटल संसाधनों तक समान पहुँच का अभाव एक नए प्रकार की सामाजिक असमानता को जन्म दे रहा है, जिसे डिजिटल विभाजन कहा जाता है [4]। डिजिटल पहुँच आज शिक्षा, रोजगार, सूचना और सेवाओं से सीधे जुड़ चुकी है, जिससे इसका सामाजिक महत्व और भी बढ़ गया है।

डिजिटल विभाजन का प्रभाव विशेष रूप से शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल प्रशिक्षण ने अवसरों का विस्तार किया है, परंतु जिन वर्गों के पास इंटरनेट, उपकरण और डिजिटल साक्षरता नहीं है, वे इन अवसरों से बाहर रह जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों, निम्न आय वर्गों तथा वंचित सामाजिक समूहों में डिजिटल संसाधनों की कमी उन्हें सामाजिक मुख्यधारा से और दूर कर देती है [5]। इस प्रकार डिजिटल तकनीक, जो समानता का माध्यम बन सकती थी, कई बार असमानता को और अधिक सुदृढ़ कर देती है।

भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के अध्ययन में अब यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा, रोजगार और डिजिटल पहुँच को अलग-अलग नहीं, बल्कि परस्पर संबद्ध आयामों के रूप में समझा जाए। शिक्षा रोजगार को प्रभावित करती है, रोजगार आय और जीवन स्तर को निर्धारित करता है, और डिजिटल पहुँच इन सभी तक पहुँच को आसान या कठिन बनाती है। इन तीनों आयामों का संयुक्त प्रभाव सामाजिक अवसरों एवं वंचना की संरचना को आकार देता है [6]। अतः सामाजिक असमानता का विश्लेषण केवल आर्थिक या शैक्षिक दृष्टि से करना अब अपर्याप्त प्रतीत होता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पूर्ववर्ती अध्ययनों में सामाजिक असमानता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, किंतु अधिकांश शोध किसी एक आयाम तक सीमित रहे हैं। डिजिटल पहुँच को अपेक्षाकृत नया सामाजिक कारक मानते हुए उस पर केंद्रित अध्ययन सीमित संख्या में उपलब्ध हैं, विशेषकर भारतीय संदर्भ में [7]। साथ ही, शहरी-ग्रामीण तुलनात्मक दृष्टिकोण से शिक्षा, रोजगार और डिजिटल विभाजन को एक साथ जोड़कर देखने वाले अनुभवजन्य अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस की जाती है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के बदलते आयामों को शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संदर्भ में अनुभवजन्य रूप से विश्लेषित करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल असमानता के मौजूदा स्वरूप को समझने में सहायक होगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि डिजिटल युग में सामाजिक समानता की दिशा में किन क्षेत्रों में हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इस प्रकार यह शोध समाजशास्त्रीय साहित्य में एक सार्थक योगदान प्रदान करने के साथ-साथ नीति-निर्माताओं के लिए भी उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करता है [8]।

2. साहित्य समीक्षा

डिजिटल शिक्षा और डिजिटल विभाजन पर केंद्रित अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि तकनीकी प्रगति के बावजूद शिक्षा तक समान डिजिटल पहुँच अब भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। अध्ययन यह दर्शाता है कि इंटरनेट, उपकरणों और डिजिटल कौशल की असमान उपलब्धता शैक्षिक अवसरों में अंतर उत्पन्न करती है, जिससे सामाजिक असमानता और अधिक गहरी हो जाती है। विशेष रूप से ग्रामीण और निम्न आय वर्गों में डिजिटल शिक्षा की सीमाएँ स्पष्ट रूप से देखी गई हैं [1]।

सामाजिक असमानता और डिजिटल विभाजन के बीच संबंध का विश्लेषण करने वाले अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया है कि डिजिटल संसाधनों की कमी सामाजिक वंचना को बहुआयामी बना देती है। सूचना, शिक्षा और रोजगार तक सीमित डिजिटल पहुँच समाज के कुछ वर्गों को विकास की मुख्यधारा से बाहर कर देती है। यह अध्ययन डिजिटल असमानता को सामाजिक असमानता के समकालीन रूप के रूप में स्थापित करता है [2]। ऑनलाइन शिक्षा सेवाओं तक पहुँच पर आधारित अध्ययन यह रेखांकित करता है कि डिजिटल माध्यमों के विस्तार के बावजूद शिक्षा की समान उपलब्धता सुनिश्चित नहीं हो पाई है। अध्ययन में यह पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा का लाभ अधिक वर्गों तक पहुँचा, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी अवसंरचना की कमी के कारण शिक्षा में असमानता बनी रही [3]। ऑनलाइन शिक्षा में डिजिटल असमानता पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तकनीक आधारित शिक्षा प्रणाली तभी प्रभावी हो सकती है जब सभी सामाजिक वर्गों को समान डिजिटल संसाधन उपलब्ध हों। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि डिजिटल विभाजन न केवल शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है, बल्कि दीर्घकाल में रोजगार के अवसरों पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है [4]।

डिजिटल विभाजन और असमान पहुँच पर आधारित शोध यह दर्शाता है कि तकनीकी नवाचारों से लाभ उन्हीं वर्गों को अधिक मिलता है, जिनके पास पहले से संसाधन उपलब्ध होते हैं। इस अध्ययन में डिजिटल

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पहुँच को सामाजिक पूंजी के एक नए रूप के रूप में देखा गया है, जिसकी अनुपस्थिति सामाजिक असमानता को स्थायी बना देती है [5]। डिजिटल विभाजन के शैक्षिक अधिकारों पर प्रभाव का अध्ययन यह बताता है कि डिजिटल संसाधनों की कमी शिक्षा के अधिकार को व्यवहारिक रूप से सीमित कर देती है। विशेष रूप से वंचित समुदायों में डिजिटल निरक्षरता शिक्षा और सामाजिक उन्नति के मार्ग में एक गंभीर बाधा के रूप में उभरती है [6]। जाति आधारित डिजिटल विभाजन पर केंद्रित अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ डिजिटल युग में भी अपना प्रभाव बनाए हुए हैं। अध्ययन के अनुसार, जाति और सामाजिक पृष्ठभूमि डिजिटल संसाधनों तक पहुँच को प्रभावित करती है, जिससे सामाजिक असमानता का नया रूप सामने आता है [7]।

डिजिटल समाज के उदय पर आधारित शोध यह दर्शाता है कि तकनीकी विकास ने सामाजिक संरचना को पुनर्गठित किया है, किंतु यह पुनर्गठन समान नहीं रहा है। डिजिटल सुविधाओं का असमान वितरण समाज में नए प्रकार के सामाजिक वर्गों का निर्माण कर रहा है [8]।

डिजिटल असमानता और शैक्षिक परिणामों पर आधारित अध्ययन यह स्थापित करता है कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सीधे तौर पर शैक्षिक प्रदर्शन और अवसरों से जुड़ी हुई है। जिन छात्रों को डिजिटल उपकरण और इंटरनेट उपलब्ध नहीं हैं, वे प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण में पिछड़ जाते हैं [9]। डिजिटल शिक्षा और रोजगार अवसरों के संबंध पर केंद्रित अध्ययन यह दर्शाता है कि डिजिटल कौशल आज रोजगार की एक अनिवार्य शर्त बन चुका है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि डिजिटल प्रशिक्षण के अभाव में युवाओं की रोजगार-क्षमता सीमित रह जाती है [10]।

युवाओं में डिजिटल असमानता पर आधारित समाजशास्त्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तकनीकी पहुँच में अंतर युवा वर्ग के भीतर भी असमान अवसर उत्पन्न करता है। यह असमानता सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है और युवाओं के भविष्य की संभावनाओं को सीमित करती है [11]। डिजिटल विभाजन और शैक्षिक असमानता पर आधारित राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साधनों का समावेश समान रूप से नहीं हो पाया है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में क्षेत्रीय असमानता बनी हुई है [12]।

क्षेत्रीय स्तर पर डिजिटल विभाजन के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि भौगोलिक परिस्थितियाँ और स्थानीय संसाधन डिजिटल पहुँच को प्रभावित करते हैं। यह स्थिति शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शैक्षिक अंतर को और अधिक गहरा करती है [13]। शहरी-ग्रामीण शैक्षिक असमानता पर केंद्रित तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षा, रोजगार और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों में अधिक केंद्रित है। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी सामाजिक असमानता को बनाए रखती है [14]।

डिजिटल असमानता और ज्ञान विभाजन पर आधारित अध्ययन यह बताता है कि डिजिटल पहुँच के अभाव में ज्ञान और सूचना का वितरण असमान हो जाता है। यह स्थिति सामाजिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बाधित करती है [15]। डिजिटल विभाजन और रोजगार-तैयारी पर केंद्रित अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

आया है कि डिजिटल कौशल की कमी श्रम बाजार में युवाओं की प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को कमजोर करती है। इस प्रकार डिजिटल असमानता रोजगार आधारित सामाजिक असमानता को और अधिक गहरा करती है [16]।

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के बदलते आयामों को शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संदर्भ में अनुभवजन्य रूप से समझने हेतु किया गया है। यह अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प** पर आधारित है। शोध के लिए **प्राथमिक आँकड़ों** का संग्रह सर्वेक्षण पद्धति द्वारा किया गया। अध्ययन क्षेत्र के रूप में शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो सके। कुल **400 उत्तरदाताओं** (शहरी 200 एवं ग्रामीण 200) का चयन **स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि** द्वारा किया गया।

डेटा संग्रह हेतु **संरचित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया, जिसमें उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय जानकारी, शैक्षिक स्थिति, रोजगार स्थिति तथा डिजिटल संसाधनों तक पहुँच से संबंधित प्रश्न शामिल थे। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण **प्रतिशत, औसत तथा तुलनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों** के माध्यम से किया गया। अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत कर व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया। यह शोध पद्धति सामाजिक असमानता के बहुआयामी स्वरूप को समझने के लिए उपयुक्त एवं प्रभावी सिद्ध हुई।

4. परिणाम एवं विश्लेषण

इस अध्याय में क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के बदलते आयामों को शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संदर्भ में समझना है। कुल **N = 400 उत्तरदाता** (शहरी = 200, ग्रामीण = 200) से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया गया है। परिणामों को स्पष्ट करने हेतु सारणीबद्ध प्रस्तुति एवं व्याख्यात्मक अनुच्छेदों का उपयोग किया गया है।

तालिका 1 : उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल (N = 400)

जनसांख्यिकीय चर	श्रेणी	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	210	52.5
	महिला	190	47.5
आयु वर्ग (वर्ष)	18–25	96	24.0
	26–35	134	33.5
	36–45	102	25.5
	46 एवं अधिक	68	17.0
निवास क्षेत्र	शहरी	200	50.0

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

	ग्रामीण	200	50.0
शैक्षिक स्तर	प्राथमिक	60	15.0
	माध्यमिक	100	25.0
	उच्च माध्यमिक	100	25.0
	स्नातक एवं अधिक	140	35.0
रोजगार स्थिति	नियोजित	270	67.5
	बेरोजगार	130	32.5

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में लिंग, आयु, निवास क्षेत्र, शिक्षा तथा रोजगार की दृष्टि से संतुलित एवं प्रतिनिधिक नमूने का चयन किया गया है। उत्तरदाताओं में पुरुष एवं महिला की भागीदारी लगभग समान रही, जिससे लिंग-आधारित विश्लेषण की पर्याप्त संभावना बनती है। आयु वर्ग के अनुसार 26–35 वर्ष के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है, जो अध्ययन को सक्रिय कार्यशील जनसंख्या के अनुभवों से जोड़ती है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से समान संख्या में उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण अधिक सुदृढ़ बनता है। शैक्षिक स्तर में यह देखा गया कि उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि रोजगार स्थिति में लगभग एक-तिहाई उत्तरदाता बेरोजगार हैं, जो सामाजिक असमानता के आर्थिक आयाम को रेखांकित करता है। कुल मिलाकर यह जनसांख्यिकीय संरचना अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप सामाजिक असमानता के बहुआयामी विश्लेषण हेतु उपयुक्त आधार प्रदान करती है।

4.2 उत्तरदाताओं की सामाजिक–शैक्षिक पृष्ठभूमि

तालिका 2: उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तरवार वितरण

शैक्षिक स्तर	**शहरी (%)**	**ग्रामीण (%)**	**कुल (%)**
प्राथमिक	8	22	15
माध्यमिक	18	32	25
उच्च माध्यमिक	24	26	25
स्नातक	30	15	22.5
स्नातकोत्तर एवं अधिक	20	5	12.5
कुल	**100**	**100**	**100**

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) प्राप्त करने वालों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर ही शिक्षा छोड़ने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है, जो शैक्षिक असमानता के गहरे सामाजिक-आर्थिक कारणों की ओर संकेत करती है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

4.3 रोजगार की स्थिति एवं सामाजिक असमानता

तालिका 3 : रोजगार की स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

रोजगार की स्थिति	शहरी (%)	ग्रामीण (%)	कुल (%)
सरकारी रोजगार	22	8	15
निजी रोजगार	35	18	26.5
स्वरोजगार	18	24	21
असंगठित श्रम	10	32	21
बेरोजगार	15	18	16.5
कुल	**100**	**100**	**100**

तालिका 3 यह दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र एवं अनिश्चित रोजगार की स्थिति अधिक प्रचलित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में निजी एवं सरकारी रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत अधिक हैं। यह स्थिति रोजगार आधारित सामाजिक असमानता को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

4.4 आय स्तर एवं असमानता

तालिका 4: मासिक आय स्तर के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

मासिक आय (₹)	शहरी (%)	ग्रामीण (%)	कुल (%)
₹10,000 से कम	12	38	25
₹10,001 – ₹20,000	28	34	31
₹20,001 – ₹40,000	35	20	27.5
₹40,000 से अधिक	25	8	16.5
कुल	**100**	**100**	**100**

तालिका 4 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न आय वर्ग का प्रभुत्व है, जबकि शहरी क्षेत्रों में मध्यम एवं उच्च आय वर्ग की भागीदारी अधिक है। आय असमानता शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों से गहराई से जुड़ी हुई दिखाई देती है।

4.5 डिजिटल पहुँच की स्थिति

तालिका 5: डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता

डिजिटल संसाधन	शहरी (%)	ग्रामीण (%)	कुल (%)
स्मार्टफोन उपलब्ध	92	64	78
इंटरनेट कनेक्शन	88	58	73
लैपटॉप/कंप्यूटर	54	18	36
डिजिटल साक्षरता	70	32	51

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तालिका 4 यह दर्शाती है कि डिजिटल पहुँच के मामले में शहरी-ग्रामीण अंतर अत्यंत स्पष्ट है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता एवं उपकरणों की सीमित उपलब्धता सामाजिक असमानता को और गहरा करती है।

4.6 शिक्षा और रोजगार पर डिजिटल पहुँच का प्रभाव

तालिका 6: डिजिटल पहुँच का अवसरों पर प्रभाव (प्रतिशत में)

कथन	सहमत (%)	असहमत (%)
ऑनलाइन शिक्षा से अवसर बढ़े	68	32
डिजिटल प्लेटफॉर्म से रोजगार सूचना मिली	61	39
डिजिटल अभाव से अवसर सीमित हुए	74	26

तालिका 5 से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता डिजिटल माध्यमों को शिक्षा एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने वाला मानते हैं, जबकि डिजिटल अभाव को सामाजिक पिछड़ेपन का प्रमुख कारण भी स्वीकार करते हैं।

अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि भारतीय समाज में सामाजिक असमानता अब केवल आय या वर्ग तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संयुक्त प्रभाव से और अधिक जटिल होती जा रही है। शहरी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा, बेहतर रोजगार एवं डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सामाजिक प्रगति को गति देती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इन संसाधनों की कमी असमानता को स्थायी रूप प्रदान करती है। इस प्रकार डिजिटल विभाजन समकालीन सामाजिक असमानता का एक नया और महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरता है।

चर्चा

इस अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के स्वरूप में गुणात्मक परिवर्तन आया है, जहाँ पारंपरिक आर्थिक एवं शैक्षिक असमानताओं के साथ-साथ डिजिटल पहुँच एक नए निर्णायक कारक के रूप में उभरकर सामने आई है। परिणामों से यह परिलक्षित होता है कि उच्च शैक्षिक स्तर शहरी क्षेत्रों में बेहतर और स्थिर रोजगार अवसरों से जुड़ा हुआ है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित शिक्षा, असंगठित रोजगार और निम्न आय स्तर सामाजिक पिछड़ेपन को निरंतर बनाए रखते हैं। डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ने शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों को विस्तारित करने की क्षमता अवश्य दिखाई है, किंतु इसके असमान वितरण ने शहरी–ग्रामीण विभाजन को और अधिक गहरा कर दिया है। अध्ययन यह भी संकेत करता है कि डिजिटल अभाव न केवल सूचना और अवसरों तक पहुँच को सीमित करता है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता को भी बाधित करता है। अतः अध्ययन के निष्कर्ष यह पुष्ट करते हैं कि समकालीन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है, जहाँ शिक्षा, रोजगार और डिजिटल पहुँच परस्पर संबद्ध होकर सामाजिक अवसरों एवं वंचना की संरचना को निर्धारित कर रहे हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्ष यह स्थापित करते हैं कि भारतीय समाज में सामाजिक असमानता अब एक आयामी न रहकर शिक्षा, रोजगार एवं डिजिटल पहुँच के संयुक्त प्रभाव से बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। शोध से स्पष्ट हुआ कि शैक्षिक उपलब्धियाँ रोजगार के अवसरों और आय स्तर को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं, जबकि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता इन अवसरों तक पहुँच को और सुदृढ़ बनाती है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर शैक्षिक संस्थान, संगठित रोजगार और डिजिटल सुविधाएँ सामाजिक उन्नति को बढ़ावा देती हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में इन संसाधनों की सीमित उपलब्धता सामाजिक पिछड़ेपन को बनाए रखती है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि डिजिटल विभाजन समकालीन सामाजिक असमानता का एक महत्वपूर्ण नया आयाम बन गया है, जो सामाजिक गतिशीलता और समान अवसरों की संभावना को प्रभावित करता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामाजिक समानता की दिशा में प्रभावी हस्तक्षेप हेतु शिक्षा की सुलभता, रोजगार सृजन और डिजिटल समावेशन को एकीकृत नीति-ढाँचे के अंतर्गत सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

संदर्भ

[1] अ. संजय ब्रम्हाने, "डिजिटल शिक्षा एवं डिजिटल विभाजन: अवधारणा, मुद्दे और चुनौतियाँ," *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*, खंड 12, अंक 3, पृ. 45–58, 2023।

[2] आर. कुमार एवं एस. वर्मा, "डिजिटल विभाजन और सामाजिक असमानता: एक अनुभवजन्य समीक्षा," *भारतीय समाजशास्त्रीय अध्ययन*, खंड 9, अंक 2, पृ. 101–118, 2023।

[3] तानिष्का नरसरिया एवं रचना जैन, "भारत में ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँच में असमानता का अध्ययन," *अंतरराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शोध पत्रिका*, खंड 7, अंक 1, पृ. 67–82, 2023।

[4] शेरिन एल. हाग एवं शुएफेई देंग, "ऑनलाइन शिक्षा में डिजिटल असमानता और इसके सामाजिक प्रभाव," *सूचना प्रणाली शिक्षा पत्रिका*, खंड 35, अंक 3, पृ. 377–389, 2023।

[5] एम. सिंह, "डिजिटल विभाजन को पाटने की चुनौतियाँ: भारत में असमान पहुँच का विश्लेषण," *समकालीन सामाजिक शोध*, खंड 15, अंक 4, पृ. 211–228, 2023।

[6] अंजलि मेरिन जोसेफ एवं एल. टी. ओमप्रकाश, "डिजिटल विभाजन का शैक्षिक अधिकारों पर प्रभाव," *एशियाई शिक्षा एवं सामाजिक अध्ययन पत्रिका*, खंड 18, अंक 2, पृ. 55–70, 2023।

[7] पी. चक्रवर्ती, "भारत में जाति आधारित डिजिटल विभाजन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण," *सामाजिक परिवर्तन*, खंड 51, अंक 1, पृ. 29–46, 2021।

[8] एम. एच. एलस्कार, "डिजिटल समाज का उदय और सामाजिक असमानता," *समाजशास्त्र अध्ययन*, खंड 14, अंक 3, पृ. 143–160, 2023।

[9] आर. मेहता, "डिजिटल असमानता और शैक्षिक परिणामों के मध्य संबंध," *शिक्षा एवं समाज*, खंड 11, अंक 2, पृ. 89–105, 2023।

[10] के. पटेल एवं एस. यादव, "डिजिटल शिक्षा का रोजगार अवसरों पर प्रभाव: भारत से साक्ष्य," *भारतीय सामाजिक अनुसंधान पत्रिका*, खंड 10, अंक 4, पृ. 201–218, 2023।

[11] अविनाश पांडे, "भारत में युवाओं के बीच डिजिटल असमानता का समाजशास्त्रीय अध्ययन," *युवा एवं समाज*, खंड 6, अंक 1, पृ. 33–50, 2020।

[12] आर. के. शर्मा, "डिजिटल विभाजन और शैक्षिक असमानता: एक राष्ट्रीय अध्ययन," *भारतीय शिक्षा अनुसंधान*, खंड 8, अंक 3, पृ. 119–134, 2023।

[13] नीरज जोशी, "डिजिटल विभाजन और शिक्षा: क्षेत्रीय असमानताओं का विश्लेषण," *मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अनुसंधान*, खंड 5, अंक 2, पृ. 74–90, 2022।

[14] संगीता दास, "शहरी–ग्रामीण शैक्षिक असमानता का तुलनात्मक अध्ययन," *भारतीय सामाजिक संरचना*, खंड 13, अंक 1, पृ. 1–18, 2023।

[15] पी. मिश्रा एवं ए. त्रिपाठी, "डिजिटल असमानता और ज्ञान विभाजन: भारत का परिप्रेक्ष्य," *बहुविषयक सामाजिक विज्ञान पत्रिका*, खंड 9, अंक 5, पृ. 301–317.

[16] आर. वर्मा, "डिजिटल विभाजन और रोजगार-तैयारी में कौशल अंतर," *श्रम एवं विकास अध्ययन*, खंड 17, अंक 2, पृ. 156–172, 2023।